REET 2025
LEVEL-1 & 2
ROJGAR With ANKIT
वंदन बैच
हिंदी
शब्द शुद्धि, राजस्थानी शब्दों के हिंदी रूप,
राजस्थानी भाषा एवं बोली
LIVE
05-02-2025 09:00 AM

शुद्ध वर्तनी - इसका अर्थ है शब्दों को उनके स्वीकृत रूप या मानक रूप में सही ढंग से लिखना।

अर्थात

किसी भाषा के नियमों के अनुसार ही सही मात्राओं, उच्चारण, व्याकरण एवं वर्तनी के अनुरूप शब्दों को लिखना शुद्ध वर्तनी कहलाता है।

अशुद्ध शब्द	शुद्ध वर्तनी
अच्छर	अक्षर
अंत्येष्ठि	अंत्येष्टि (क्रियाकर्म)
अट्टारी	अट्टालिका
अंतर्चेतना	अंतश्चेतना
अवशान	अवसान
अष्टवक्र	अष्टावक्र

आरोग्यता	आरोग्य
आर्कषक	आकर्षक
ऊषा	उषा
उन्मिलित	उन्मीलित
उपलक्ष	उपलक्ष्य
एक्ट	ऐक्ट
त्यौहार	त्योहार

झनकृत	झंकृत
तत्कालिक	तात्कालिक
तदोपरांत	तदुपरांत
त्रिमासिक	त्रैमासिक
धैर्यता	धैर्य, धीरता
प्रणयनी	प्रणयिनी
प्रियदर्शनी	प्रियदर्शिनी

भाग्यमान	भाग्यवान्
मत्सेंद्र	मत्स्येंद्र
व्यंगोक्ति	व्यंग्योक्ति
चाहरदीवारी	चारदीवारी/चहारदीवारी
छयालीस	छियालीस
उज्वलन	उज्ज्वलन
कृप्या	कृपया

कविवियित्री	कवयित्री
मैथीलि	मैथिली
समुज्जवल	समुज्ज्वल
प्रिथ्वी	पृथ्वी
फिटकरी	फिटकिरी
इकईयाँ	इकाइयाँ
आर्शीवाद	आशीर्वाद

वीदुषी	विदुषी
क्लेष	क्लेश
हिरण्यकश्यपु	हिरण्यकशिपु
विरहणी	विरहिणी
भगीरथी	भागीरथी
सुशूषा	शुश्रूषा
दुर्वीवार	दुर्निवार

m द्वारिका	द्वारका
m अहिल्यि	अहल्या
m ज्योतसना	ज्योत्स्ना
परलौकिक	पारलौकिक
पोरूष	पौरुष
(m) सांस्कृत्यायन	सांकृत्यायन
टिप्पड़ी	टिप्पणी

भुख्खड़	भुक्खड़ ✓
जीजीविषा	जिजीविषा ✓
पूज्यनिय	पूजनीय ✓
कुमुदनी	कुमुदिनी ✓
वाल्मीकी	वाल्मीकि ✓
युधिस्टिर	युधिष्ठिर ✓
मृत्युजन्तय	मृत्युंजय ✓

परिश्रमिक	पारिश्रमिक
कालीदास	कालिदास
अर्न्तराष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय
अन्त्यक्षरी	अन्त्याक्षरी
चिह्न	चिह्न
विश्लेसण	विश्लेषण
तत्कालिक	तात्कालिक

छुधा	क्षुधा
छमा	क्षमा
तालासी	तलाशी
स्थई	स्थायी
व्यवहारिक	व्यावहारिक
रिण	ऋण
पुरुस्कार	पुरस्कार

अहार	आहार
आधीन	अधीन
औतार	अवतार
सरेय	श्रेय
अनुग्रहीत	अनुगृहीत
पैत्रिक	पैतृक
अनेकों	अनेक

अगामा	आगामी
स्वतंत्रय	स्वातंत्र्य
घनिष्ट	घनिष्ठ
ऊपरीलिखित	उपरिलिखित
त्रिदोश	त्रिदोष
प्रतिनीधि	प्रतिनिधि
आजिविका	आजीविका

कालिदी	कालिंदी
यानि	यानी
रेणू	रेणु
तिथी	तिथि
नरायण	नारायण
शौन्दर्य	सौन्दर्य
शूपणखा	शूर्पणखा

अकश्मात्	अकस्मात्
जगत	जगत्
मूल्यवान	मूल्यवान्
मध्यान्ह	मध्याह्न
रविन्द्रनाथ	रवीन्द्रनाथ
कोललंगी	कोमलांगी
कर्तव्य	कर्त्तव्य

महत्व	महत्त्व
एक्य	ऐक्य
अर्न्तद्वन्द्व	अन्तर्द्वन्द्व
भोगोलिक	भौगोलिक
वेज्ञानिक	वैज्ञानिक
रूपया	रुपया
दिपिका	दीपिका

मिष्ठान्न	मिष्टान्न
अनुदित	अनूदित
संसारिक	सांसारिक
नीती	नीति
शान्ती	शान्ति
हेतू	हेतु
मुनी	मुनि

सिन्दुर	सिन्दूर
योवन	यौवन
फांसी	फाँसी
अंधेरा	अँधेरा
विजली	बिजली
जम	यम
कलस	कलश

माहातम्य	माहात्म्य
वसिष्ट	वसिष्ठ
नराज	नाराज़
न्यौता	न्योता
निरूपम	निरुपम

राजस्थानी शब्द	हिन्दी रूप
अंकड़ौ	बहादुर
अंका गाड़ी	हवाई जहाज
अंकोट	जंगली वृक्ष
अंगड़ाणौ	करवट लेना
अंगोछा	तौलिया

अंबराई	समूह
अटारी	महल
इकलंग	निरन्तर
इरकी	कोहनी
उकीरौ	गोबर का कीड़ा
उगाड़	खुलासा

➯ उड़ांगर	पक्षी
➯ उचरी	प्रशंसा
➯ उचिता	कुदरत
➯ उत्तमांग	शिर
➯ एकदा	एक समय
➯ एकादस	ग्यारह

एकल्लो	अकेला
ऐफेरग	अफीम
ऐंचरग	तनाव
ओठौ	विषय
ओदक	चौकन्ना
औचट, औचक	अचानक

- औटाल — चालाक
- कंकड़ीलौ — कंकरीली भूमि
- कंकरगी — घुंघरू
- कंगूरा — शिखर
- कंचरग — सोना
- कंडी — टोकरी

कंता	पत्नी
कंदील	तीर
कंच	गर्दन
कसा	घमंड
काकाई	चचेरा
कायली	आलस्य

कापरौ	वस्त्र
काळी	पागल
कितएक	कितने
किथा	क्या
किथै	कहाँ
कुभट	डरपोक

कुमथा	गुस्सा
खंडा	तलवार
खंडीवन	आग
खकर	मोर
खड़गी	योद्धा
खरीदौ	ग्राहक

खगह	युद्ध
खिड़क, खड़की	खिड़की
खिरग	बिजली
खुड़, खुर	पैर
खुड़ी	ऐड़ी
खोदाई	ईर्ष्या

- खेथी
- खोसौ
- गंगेस
- गंटकटौ
- गंठाई
- गंदीवाड़ौ

दुश्मन
लुटेरा
महादेव
चोर
मित्रता
भ्रष्टाचार

गंधहर	नाक
गइलौ	पागल
गबड़कौ	व्यर्थ की बात
गमार	गँवार
गर	जहर
गरजदार	स्वार्थी

गरडापरग	वृद्धावस्था
गरदब	गधा
गल्लवर	हाथी
गवास	गौ हत्यारा
गस	बेहोशी
गाइ	गाय

गाछ	वृक्ष
गिंदुक	तकिया
गिड़दी	भीड़
गिरत	पर्वत
गुख	गवाक्ष
गुगर	घुंघरू

- गुहा — गुफा
- घंट — गला

राजस्थानी भाषा एवं बोली -

राजस्थानी भाषा भारत के राजस्थान राज्य और उससे सटे हुए अन्य राज्यों में बोली जाने वाली एक महत्वपूर्ण भाषा है। यह इंडो-आर्यन भाषा परिवार की सदस्य है और इसकी उत्पत्ति प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं से हुई मानी जाती है।

राजस्थानी भाषा की प्रमुख बोलियाँ

राजस्थानी भाषा के तहत कई बोलियाँ आती हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं-

1. मारवाड़ी – यह राजस्थान की सबसे अधिक बोली जाने वाली बोली है, जो जोधपुर, नागौर, पाली, बाड़मेर, जैसलमेर, और बीकानेर क्षेत्रों में प्रचलित है।

2. मेवाड़ी – उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, और भीलवाड़ा क्षेत्रों में बोली जाती है।

3. ढूंढाड़ी – जयपुर, दौसा, टोंक, और सीकर क्षेत्र में प्रचलित है।

4. हाड़ौती – कोटा, बूंदी, बारां, और झालावाड़ क्षेत्रों में बोली जाती है।

5. शेखावाटी – झुंझुनू, सीकर, और चुरू जिलों में प्रचलित है।

6. मालवी – मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में बोली जाती है, लेकिन राजस्थान के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रभाव है।

7. गुर्जरी – गुर्जर समुदाय द्वारा बोली जाने वाली एक प्राचीन राजस्थानी बोली है।

8. बागड़ी – हरियाणा और राजस्थान के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

9. वागड़ी – दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, डूंगरपुर) और गुजरात के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

10. मेरवाड़ी – यह मुख्य रूप से राजस्थान के पश्चिमी भाग में बोली जाती है।

राजस्थानी भाषा की विशेषताएँ

शब्दावली में तात्कालिकता – राजस्थानी में कई ऐसे शब्द हैं जो सीधे संस्कृत और प्राकृत भाषा से लिए गए हैं।

स्वर और व्यंजन भिन्नताएँ – राजस्थानी बोलियों में स्वर और व्यंजनों की ध्वनि में अंतर होता है, जिससे अलग-अलग क्षेत्रों में उच्चारण भिन्न होता है।

लिंग और वचन – राजस्थानी में लिंग (पुल्लिंग और स्त्रीलिंग) और वचन (एकवचन और बहुवचन) का स्पष्ट विभाजन है।

विशेष व्याकरणिक संरचना – वाक्य संरचना हिंदी से कुछ अलग होती है, जैसे कि क्रियाओं का प्रयोग और वचन परिवर्तन।